संडे स्पेशल

डॉक्टरों की डॉक्टर

अनीता संजय सालुंखे

होमियोपैथिक डॉक्टरों को समाज में दूसरे स्थान पर रखा जाता है। एलोपैथिक डॉक्टरों की समाज में जितनी मान्यता है उतनी होमियोपैथिक की नहीं है। इस रूढ़ि को बदलने का उल्लेखनीय कार्य डॉ. अनीता सालुंखे ने किया है। उनका मानना है कि जहां एलोपैथी की दवा बीमारियों को स्वस्थ करने की कोशिश करती है, वहीं होमियोपैथी रोग को जड़ से मिटा देती है। उनका झुकाव होमियोपैथी की तरफ होने का कारण भी यही है। खाड़ी देशों को आम का निर्यात करने वाले श्री काले की कन्या अनीता का बचपन बहुत ही लाड़-प्यार भरा था। घर में सभी सुख-सुविधाएं थीं। उन्होंने भले ही गरीबी नहीं देखी लेकिन मजबूरी में गरीबों को एलोपैथी के पीछे पैसा और समय बर्बाद करते देखा। तभी उन्होंने ठान लिया कि उस दायरे को तोड़ना होगा। उन्होंने इसलिए अपना पहला दवाखाना चेंबूर की एक झुग्गी बस्ती में खोला और साथ ही एक सीनियर डॉक्टर के यहां नि:शुल्क सेवा करते हुए होमियोपैथी सीखने लगीं। चेंबूर के जॉय अस्पताल में नाइट शिफ्ट करने वाली वह प्रथम लेडी डॉक्टर थीं। प्रात: घर आकर कॉलेज जाना, रात्रि में अस्पताल में काम करना और बचे हुए समय में झुग्गी का दवाखाना संभालना यह उनके उम्मीद के दिनों का दिनक्रम था। आज के युवकों से तुलना करें तो खेलने, खाने के सुनहरे दिनों को उन्होंने अपनी उद्देश्यपूर्ति पर न्यौछावर कर दिया। होमियोपैथी में रुचि होने के कारण उन्होंने पूना के साठे मेडिकल कॉलेज से समग्र शिक्षा लेकर अपनी रुचि को व्यवसाय में परिणित किया। मुंबई आकर डॉ. अनीता काले ने होमियोपैथी द्वारा अपने रोगियों के असाध्य रोगों को ठीक करना शुरू किया। तब उनके पास एक स्कूटी हुआ करती थी जिससे वे दिन-रात अपने मरीजों की सेवा किया करती थीं। आज वे एफएसी होमियोपैथिक सेंटर की प्रसिद्ध मानद डाक्टर हैं, जहां वे १९९८ से नि:शुल्क सेवा दे रही हैं। एफएसी एक ऐसा संस्थान है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होमियोपैथी की शिक्षा देता है। जिसके माध्यम से जर्मनी, अमेरिका, ब्राजील, बल्गेरिया, इस्त्रायल और रूस के एमडी भी डा. अनीता सालुंखे से होमियोपैथी इंडिया वर्कशॉप शुरू किया वे स्वयं २००१ में एमडी हुई थीं। आधुनिकता के साथ चलना डा. अनीता सालुंखे की खासियत है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में उन्होंने वेब क्लीनिक शुरू किया है जिसकी सहायता से व ई-मेल द्वारा दूरस्थ रोगियों को ही नहीं अपितु चिकित्सकों को भी मार्गदर्शन करती हैं। सीडी द्वारा भी रोगियों का उपचार करती हैं। डाक्टर का मानना है कि अधिकतर बीमारियां हार्मोंस के बदलाव या रोग प्रतिकार शक्ति क्षीण होने से होती है। अत: रोगी के मन, स्वभाव एवं शरीर को पोषक दवाएं देकर और ऊर्जा वर्द्धक काऊंसि लिंग करके किसी भी रोग का सफल उपचार किया जा सकता है। होमियोपैथिकी रोगों को जीवन रक्षक दवाओं के सहारे जिंदा रखने में विश्वास नहीं करतीं अपितु रोगी के शरीर को बलवान रोगों को जड़ से मिटाने में कारगर है। इसलिए अस्थायी रूप से उपचार करने के बजाय रोगों को समूल नष्ट करने का डा. अनीता सालुंखे का प्रयत्न रहता है। इसी विश्वास के कारण उन्होंने अनेक असाध्य रोगी ठीक किए हैं। सात वर्ष की भक्ति गावकर जो खौलते पानी में गिर जाने से घुटने से लेकर कमर तक झुलस गई थी, दो-दो आपरेशन के बाद भी ठीक नहीं हो सकीं। डा. अनीता सालुंखे ने केवल १५ दिनों में इतना ठीक कर दिया कि वह बिना किसी प्रयास के कुर्सी पर बैठने लगीं। चालीस गांव महाराष्ट्र से आई हुई कर्णिक पूरे शरीर के सुरायसिस से बुरी तरह पीड़ित थी, एलोपैथिक दवाइयां खा- खाकर त्रस्त हो चुकी थीं, केवल एक वर्ष के उपचार से पूरी तरह स्वस्थ्य हो गई। ऐसे अनेक रोगी डाक्टर के प्रभावी उपचार प्रणाली से स्वास्थ्य लाभ करके सामान्य जीवन बिता रहे हैं। डा. सालुंखे को बाल रोगों में विशेष निपुणता प्राप्त है। अनेक माता-पिता बच्चों के अस्वस्थ्य होने के कारण चिंतामुक्त रहते हैं। डा. सालुंखे ने बच्चों की सभी बीमारियों का सहजता पूर्वक इलाज करके ऐसे माता-पिताओं को चिंतामुक्त कर दिया है।

कहते हैं हर पुरुष की उन्नति के पीछे एक स्त्री होती है और स्त्री की उन्नति के पीछे उनकी अदम्य इच्छाशक्ति होती है। इसी इच्छाशक्ति के बल पर एक स्त्री समाज के अवांछित तत्वों से संघर्ष करती हुई आगे बढ़ती है। इस बारे में डाक्टर सालुंखे अपने पति संजय सालुंखे का नाम लेना कभी नहीं भूलतीं। संजय सालुंखे भी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। वे एमबीए हैं, डाक्टर हैं और एलएलबी भी हैं। इन सबसे हटकर वे एक सफल व्यवसायी हैं। उनकी नेट टेक्नोलोजी की फर्म है जिसका विस्तार